किन्नौर वन मण्डल के निगुलसरी में कड़ू एवं चिरायता की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

Training programme on cultivation of Kadu and Chirayta at Nigulsari, Kinnaur forest division

भा॰वा॰अ॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा जाईका जड़ी बूटी सेल हिमाचल प्रदेश वन विभाग से वित्तपोषित परामर्श परियोजना के तहत कड़ू एवं चिरायता औषधीय पौधे उगाने, संरक्षण एवं मार्केटिंग हेतु हैंडहोल्डिंग एवं कौशल विकास विषय पर पाँच सामान्य हित समूहों के सदस्यों क्रमशः तरंडा, तरंडा-I, तरंडा-II एवं निगुलसरी तथा वन विभाग भावानगर एवं निचार क्षेत्र का वन विभाग का फील्ड स्टाफ एवं स्थानीय महिला समूहों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन निगुलसरी में 20 नवंबर, 2025 को किया, जिसमें 68 लोगों ने भाग लिया । डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान, प्रशिक्षण समन्वयक एवं परामर्श परियोजना अन्वेषक ने कहा कि यह परामर्श परियोजना जड़ी बूटी सेल जाईका, वन विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा वित्त पोषित की गई है, जिसका उद्देश्य सामान्य हितधारक समूहों को कड़ू एवं चिरायता जड़ी बूटियों को उगाने के बारे में हैंड होल्डलिंग स्पोर्ट एवं कौशल विकास करना है । डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक अनुसंधान ने जड़ी बूटीयों से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि जड़ी बूटियों का दोहन अवैज्ञानिक तरीके से हो रहा है, जिससे बहुत सी जड़ी बूटियां लुप्त होने के कगार पर हैं । इसके अलावा अन्य बहुत जड़ी बूटियों का दोहन किया जा रहा है, किंतु जीडीपी में इसका योगदान कम प्रदर्शित हो रहा है । संस्थान इसका आंकलन करने में भी प्रयासरत है । उन्होंने कड़ू एवं चिरायता खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी । कड़ू के एक पौधे से अधिक पौधे तैयार करने की मैक्रोप्रोलिफरेशन विधि के बारे में प्रतिभागियों को अवगत करवाया और इसके लिए उचित प्रकार के खेत अथवा पौधारोपण क्षेत्र चुनने और संभावित दिक्कतों से निदान पाने हेतु प्रमुख सावधानियां सुझाई । उन्होंने कहा कि पुराना बीज़ उपयोग ना करे क्योंकि पुराने बीजों की उगने की क्षमता कमजोर होती है जिससे बीजों में अंकुरण नहीं होता है । डॉ. अश्वनी तपवाल, प्रभाग प्रमुख

विस्तार ने औषधीय पौधे उगाने हेतु जैव उर्वरक के उपयोग के बारे में जानकारी दी । उन्होंने जैव उर्वरक तैयार करने की हैंड्स ऑन प्रशिक्षण भी दिया । इसके अलावा उन्होंने जैव विधि से फसलों में कीड़े के प्रकोप के नियंत्रण करने के बारे में बताया । श्री सी॰ एम॰ शर्मा, सेवानिवृत वन मंडल अधिकारी एवं सलाहकार जायका ने कहा कि जाइका जड़ी बूटी सेल किसानों के साथ सहयोग के लिए सदैव तत्पर है । डॉ. जोगिंदर चौहान ने इन क्षेत्रों में उगाने वाले उचित पौधों जैसे कि कड़ु, चोरा, वन ककड़ी, निहानी, कुठ इत्यादि की पहचान, उपयोग और महत्व के बारे में बताया । डॉ॰ राजेश चौहान, प्रबंधक विपणन, जड़ी बूटी सेल जायका ने औषधीय पौधों का विपणन और पहुंच एवं लाभ साझाकरण के बारे में जानकारी दी । उन्होंने कहा कि जायका कुटकी की मार्केटिंग के लिए समिति या फार्मर प्रोड्यूसर ग्रुप का गठन करेगी ताकि मार्केटिंग से संबंधित बाधाओं को दूर किया जा सके । समिति के गठन एवं विभिन्न मार्केटिंग गतिविधियों को चलाने के लिए जायका के पास 10 लाख तक का प्रावधान है । यदि समिति नहीं भी बनती तो जड़ी बूटी के विभिन्न व्यापारिक गतिविधियों को चलाने के लिए 5 लाख तक का प्रावधान है, ताकि मार्केटिंग फैसिलिटी को सुचारू रूप से चलाया जा सके । जायका मार्केटिंग के लिए विभिन्न संस्थाओं, फार्मा कंपनियों जैसे डाबर, पतंजलि, हिमालय आदि को जड़ी बूटी आधारित उद्योगों से मार्केटिंग संपर्क साधने में समिति की हेल्प करेगी । चर्चा एवं व्याख्यान के माध्यम से जानकारी सांझा करने के बाद कड़ू एवं चिरायता समूह के सदस्यों को प्रैक्टिकल जानकारी दी गई । इस अवसर पर श्री परमा नन्द वन परिक्षेत्र अधिकारी भावनगर एवं श्रीमती राधिका एस एम एस भी उपस्थित रहे ।

ICFRE- Himalayan Forest Research Institute, Shimla organized a one-day training program on “Handholding and skill development for cultivating, conserving, and marketing the medicinal plants Kadu and Chirayata.” under a consultancy project funded by the JICA Jadi Buti Cell of Himachal Pradesh Forest Department on 20th November, 2025 at Nigulsari for members of five Common Interest Groups - Taranda, Taranda-I, Taranda-II, Nigani, and Nichar, along with field staff of the Forest Department (Bhavanagar & Nichar) and local women’s groups. A total of 68 participants attended the training. Dr. Joginder Singh Chauhan, Training Coordinator and Principal Investigator of the consultancy project, stated that this project is funded by the JICA Jadi Cell of the Himachal Pradesh Forest Department. Its objective is to provide handholding support and skill development to common interest groups for cultivating Kadu and Chirayata medicinal herbs. Dr. Sandeep Sharma, Scientist-G and Group Coordinator (Research), highlighted various issues related to medicinal plants. He stated that many medicinal plants are being exploited in unscientific ways, due to which several species are on the verge of extinction. He also mentioned that although many herbs are being harvested, their contribution to the GDP is under-represented. The institute is working to

assess this as well. He provided detailed information about Kadu and Chirayata cultivation. He explained the macro-proliferation technique for producing multiple plants from a single Kadu plant and briefed participants on selecting suitable fields or plantation areas, along with precautions to overcome potential challenges. He advised not to use old seeds, as their germination capacity is weak. Dr. Ashwani Tapwal, Head, Extension Division, shared information about the use of bio-fertilizers for cultivating medicinal plants. He also provided hands-on training on the preparation of bio-fertilizers. In addition, he discussed biological methods for controlling pest attacks in crops. Sh. C. M. Sharma, DFO (Retd.) and JICA Consultant, said that the JICA Jadi Cell is always ready to extend support to farmers. Dr. Joginder Chauhan discussed the identification, uses, and importance of suitable local plants grown in the region, such as Karu Chora, Van Kakri, Nihani, Kuth, etc. Dr. Rajesh Chauhan, Marketing Manager, JICA Jadi Buti Cell, provided information about the marketing of medicinal plants, access, and benefit-sharing. He stated that JICA will facilitate the formation of committees or Farmer Producer Groups for marketing of Kudu, so that marketing-related obstacles can be resolved. JICA has a provision of up to Rs.10 lakh for forming committees and carrying out various marketing activities. Even if a committee is not formed, JICA has a provision of up to Rs.5 lakh to support different commercial activities related to medicinal herbs, ensuring smooth marketing facilities. JICA will also help committees to establish marketing links with various institutions and pharma companies such as Dabur, Patanjali, Himalaya, and others involved in herbal-based industries. After sharing information through discussions and lectures, practical training was provided to training participants. On this occasion, Shri Parma Nand Forest Range Officer Bhavnagar and Mrs. Radhika SMS were also present.

कार्यक्रम की झलकियाँ

JICA
र्शन कार्यक्रम
स्थान
किन्नौर, हि.प्र.

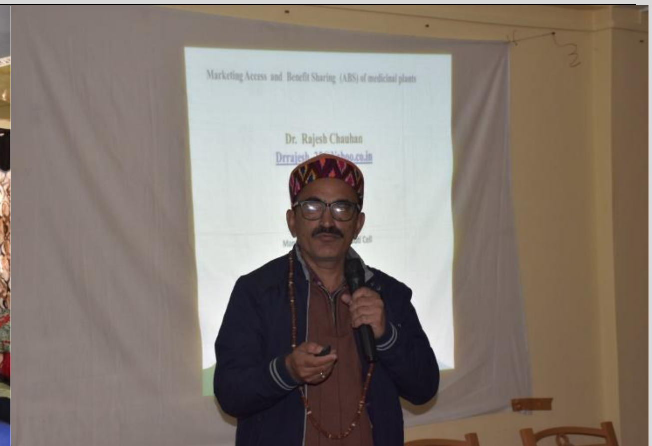
Marketing Access and Benefit Sharing (ABS) of medicinal plants
Dr. Rajesh Chauhan

मीडिया कवरेज़

News Views Post

निगुलसरी में औषधीय पौधों की खेती और मार्केटिंग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

Posted By: newsviewspost on: November 21, 2025 In: Breaking News No Comments

निगुलसरी। न्यूज़ व्यूज पोस्ट,हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने जाईका जड़ी बूटी सेल और हिमाचल प्रदेश वन विभाग के सहयोग से कड़ू और चिरायता जैसी औषधीय पौधियों के संरक्षण, खेती और विपणन पर वि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण में पांच सामान्य हितधारक समूहों के सदस्य, वन विभाग का फील्ड स्टाफ और स्थानीय महिला समूहों के कुल 68 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण के दौरान डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने परियोजना का उद्देश्य साझा करते हुए बताया कि इसका मुख्य लक्ष्य किसानों और हितधारक समूहों को औषधीय पौधों की वैज्ञानिक खेती और हैंडहोल्डिंग समर्थन प्रदान करन संदीप शर्मा ने अवैज्ञानिक दोहन और लुप्तप्राय जड़ी बूटियों के संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कड़ू और चिरायता की मैक्रोप्रोलिफरेशन विधि से पौध उत्पादन, उचित खेत चयन और बीज उपयोग पर विस्तृत दी।

डॉ. अश्वनी तपवाल ने जैविक उर्वरक के निर्माण और उपयोग का प्रैक्टिकल प्रशिक्षण दिया और जैविक कीट नियंत्रण के उपाय भी साझा किए। श्री सी.एम. शर्मा ने किसानों को औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रोत्साहित किय जाईका टीम के सहयोग का भरोसा दिलाया।

प्रबंधक विपणन डॉ. राजेश चौहान ने किसानों को औषधीय पौधों के विपणन, लाभ साझा करने और फार्मर प्रोड्यूसर ग्रुप के गठन के माध्यम से मार्केटिंग सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जाईका विभिन्न प कंपनियों के साथ सहयोग कर किसानों को बेहतर बाजार उपलब्ध कराने में मदद करेगी।

कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों को कड़ू और चिरायता की खेती में आने वाली समस्याओं का व्यावहारिक समाधान भी प्रदान किया गया। इस अवसर पर वन परिक्षेत्र अधिकारी परमानंद धरेक और राधिका नेगी भी उपस्थि

****